संपादकीय

गुयाना की अर्थव्यवस्था ने सारी दुनिया को चौंकाया

वेस्टइंडीज का एक छोटे से देश गुयाना की लॉटरी खुल गई है। माइनिंग और कृषि की आय पर आधारित मात्र आठ लाख की आबादी वाले इस देश में, कच्चे तेल का बड़ा भंडार मिला है। कच्चे तेल के कारण गुयाना की अर्थव्यवस्था में एकाएक भारी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। विश्व बैंक के अनुसार दुनिया के सभी देशों की अर्थव्यवस्था में गुयाना की अर्थव्यवस्था सबसे तेज गति से बढ़ रही है। इसकी आर्थिक विकास दर 38 फ़ीसदी पर पहुंच चुकी है। जो अपने आप में एक रिकॉर्ड बन गया है। गुयाना कच्चे तेल का उत्पादन और निर्यात करने वाला सबसे बड़ा देश बनकर उभर रहा है। यहां पर तेल की दौळत बरस रही है।अभी 99000 बिलियन बैरल प्रतिदिन कच्चे तेल का उत्पादन हो रहा है। 2027 तक लगभग 11 लाख बिलियन बैरल कच्चे तेल का उत्पादन गुयाना में होने लगेगा। गुयाना पूरे दुनिया के देशों को खाड़ी देशों से कम दाम पर,कच्चे तेल का निर्यात कर रहा है। जिसके कारण गुयाना की आर्थिक स्थिति बड़ी तेजी के साथ बदल रही है। यदि यही स्थिति रही, तो गुयाना का हर नागरिक जल्दी ही अरब के शेखो की तरह अमीर बन जाएगा। विश्व बैंक ने जो रिपोर्ट जारी की है, उसके अनुसार वर्ष 2023-24 में गुयाना की आर्थिक विकास दर 38 फीसदी रही है। दुनिया के किसी भी देश की इतनी आर्थिक विकास दर नहीं है।भारत की आर्थिक विकास दर 5.8 फ़ीसदी है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल में जरूर 7 फीसदी से ज्यादा आर्थिक विकास दर भारत की रही है। इस हिसाब से दुनिया के सभी देशों की तुलना में गुयाना की आर्थिक स्थिति आने वाले सालों में भी बहुत बेहतर होगी। गुयाना की आबादी मात्र आठ लाख है। यहां पर भारतीय मूल और फ्रांसीसी मूल के नागरिक रहते हैं।अभी तक उनकी आय का एकमात्र स्रोत माइनिंग और कृषि हुआ करता था। अब तेल की कमाई से यहां की स्थिति बड़ी तेजी के साथ बदल रही है। गुयाना बहुत छोटा सा सुन्दर देश है।कच्चे तेल के कारण सऊदी अरब, अमेरिका, कनाडा तथा रूस की अर्थव्यवस्था पर विपरीत असर पड़ना तय है।ऐसी स्थिति में गुयाना के ऊपर कई नए अंतरराष्ट्रीय संकट और राजनीतिक दबाव पडना भी तय माना जा रहा है। इस स्थिति से गुयाना की सरकार किस तरह से निपटेगी, इसको लेकर गुयाना सरकार की चिंता बढ़ी हुई है। विश्व बैंक की नजर गुयाना पर बनी हुई है।विश्व बैंक का मानना है, अगले 5 वर्षों में गुयाना मे प्रति व्यक्ति आय में लगभग 115 फ़ीसदी की वृद्धि दर बनी रहेगी। इस तरह की लॉटरी गुयाना की खुलेगी, इसकी कल्पना गुयाना के नागरिकों ने भी नही की थी। अरब देशों की किस्मत करीब सात दशक पहले तेल भंडारों के कारण खुली थी। जब वहां पर तेल के बड़े-बड़े भंडार मिले थे। लगभग सात दशक के बाद अब गुयाना की लॉटरी खुली है। बहुत कम आबादी होने के कारण गुयाना के लोगों में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ी है। गुयाना में तेल भंडार मिलने के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल के भाव नियंत्रित हो गए हैं। यह भी संभावना व्यक्त की जा रही है,आगे चलकर कच्चे तेल के दाम और कम होंगे। इसका सबसे बड़ा फायदा विकासशील देशों और आर्थिक रूप से पिछड़े देशों को होगा। अंतरराष्ट्रीय बाजार में 2008 के बाद से कच्चे तेल के दाम लगातार बढ़ते रहे हैं। जिसके कारण कई देशों की अर्थव्यवस्था ही लड़खड़ा गई थी। ओपेक देशों की दादागिरी के कारण तेल के दाम लगातार बढ़ रहे थे। गुयाना में तेल के जो भंडार मिले हैं। उसके बाद अब ओपेक के सदस्य देशों,अमेरिका और रूस जैसे देशों का तेल के व्यापार में जो एकाधिकार था। उस एकाधिकार को गुयाना ने कमजोर कर दिया है। इसका फायदा दुनिया के सारे देशों को मिलेगा, यह आशा की जाने लगी है।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर माना जा रहा है, कि कच्चे तेल की कीमतों को वर्तमान स्थिति के कारण लंबे समय तक नियंत्रित रखा जा सकता है। यदि यही स्थिति बनी रही, तो भारत को भी इसका बड़ा लाभ मिलना तय है। भारत में 80 फ़ीसदी से ज्यादा कच्चे तेल का आयात किया जाता है। कच्चे तेल के दाम बढ़ने से भारत की अर्थव्यवस्था पर इसका बहुत बुरा असर पड़ता है। कच्चे तेल का भुगतान डॉलर मुद्रा में होने के कारण विदेशी मुद्रा की भी समस्या का सामना करना पड़ता है। कच्चे तेल की कीमत यदि नियंत्रित रहेगी, तो भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत बनी रहेगी।

गर्भाशय तक पहुंच रहे प्लास्टिक के कण

विजय कुमार जैन

मानव प्रतिदिन विभिन्न माध्यमों से प्लास्टिक खा रहा है। यह समस्या भारत की न होकर दुनिया की जटिल समस्या बन गई है। प्लास्टिक के अति सूक्ष्म कण भोजन, अल्पाहार एवं पानी के साथ हमारे शरीर में जा रहे हैं। जिससे हमारे शरीर में अनेक बीमारियां जन्म ले नहीं है। गंभीर बीमारियों से घिरकर असमय में मौतें हो रही है। वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (डब्ल्यू डब्ल्यू एफ)के ताजा शोध से पता चला है कि एक आदमी अति सूक्ष्म कणों के रूप में प्रतिदिन प्रतिमाह 21 ग्राम प्लास्टिक खा जाता है प्रति छै माह में लोग 125 ग्राम प्लास्टिक विभिन्न स्रोतों से खा लेते हैं। डब्ल्यू डब्ल्यू ऑफ की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है एक आदमी तिल से भी छोटे कणों के रूप में न सिर्फ प्लास्टिक खा रहा है। बल्कि विभिन्न पेयों कोल्ड ड्रिंक्स,जूस,चाय एवं पानी के रूप में पी रहा है। डब्ल्यू डब्ल्यू ऑफ ने इस अध्ययन के लिए दुनिया भर में 50 से अधिक अध्ययनों के आंकड़े जुटाये हैं ।इस अध्ययन में 5 किलोमीटर आकर के प्लास्टिक तक के सेवन की बात सामने आई है। प्लास्टिक प्रदूषण अब नए चिंता जनक स्तर पर पहुंच गया है। टॉक्सियोलॉजीकल साइंसेज में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि प्लास्टिक के सूक्ष्म कण अब माता के गर्भ तक पहुंच गए हैं। अध्ययन के अनुसार शोधकर्ताओं ने 62 प्लेसेंटा (भ्रूण तक पोषण पहुंचाने वाला गर्भाशय का हिस्सा) नमूनों का अध्ययन किया। सभी 62 नमूनों में 6.5 से 790 माइक्रोग्राम तक माइक्रो प्लास्टिक मिला ।अध्ययनकर्ता अमेरिका स्थित यूनिवर्सिटी आफ न्यू मैक्सिको हेल्थ साइंसेज के वैज्ञानिकों ने चेताया है कि प्लास्टिक की यह मात्रा कम लग सकती है पर दो कारणों से चिंता जनक है। पहला हमारे आसपास लगातार प्लास्टिक प्रयोग बढ़ रहा है ऐसे में प्रदूषण के आगे और बढ़ने की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता। दूसरा प्लेसेंटा माता के गर्भ में 8 महीने के लिए ही बनता है, इस 8 माह के अल्प समय में ही गर्भाशय के इस हिस्से पर प्लास्टिक के कणों का पहुंचना बताता है कि हमारे आसपास किस कदर प्लास्टिक प्रदूषण पैर पसार चुका है। हर 10 से 15 साल में प्लास्टिक प्रदूषण की मात्रा दो गुनी हो रही है। इसका आशय यह है कि अगर हम इसको आज रोक भी दें तो 2050 तक आज से 3 गुना प्लास्टिक के साथ जी रहे होंगे। अध्ययन कर्ता ने दान किए गए प्लेसेंटा उत्तकों का विश्लेषण किया।सेपोनिफिकेशन नामक प्रक्रिया में उन्होंने नमूने का पहले केमिकल उपचार किया। फिर उन्होंने प्रत्येक नमूने को एक अल्ट्रासेंटीफ्यूज में घुमाया, जिससे एक ट्यूब के नीचे प्लास्टिक के छोटे कण शेष रह गए। इसके बाद टीम ने पायरोलिसिस नामक तकनीक का इस्तेमाल किया।

उन्होंने प्लास्टिक कणो को एक धातु के कप में 600 डिग्री सेल्सियस तक गर्म किया। इस दौरान गैस उत्सर्जन के रूप में अलग-अलग तापमान पर निकलने वाले विभिन्न प्लास्टिक के कणों को जमा किया गया।

अब गांधी का नहीं मोदी परिवार भी.....

राकेश अचल

नसीब खराब हो तो त्रिदेव भी आपकी मदद नहीं कर सकते।कम से कम हम भारतीय गण तो ये मानकर चलते हैं।हानि,लाभ, जीवन,मरण ,जस,अपजस भले ही विधि के हाथ हो लेकिन जो विधि लिखा लिलार,सो बदल नहीं सकता।

पूरे 44 साल से नेहरू - गांधी के बहाने राजनीति में परिवारवाद को पानी पी - पीकर कोसने वाले भी आखिर में परिवारवाद के शिकार हो गए। प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी भरे - पूरे परिवार में जन्मे लेकिन अपना परिवार नहीं बना पाए। उनके घर वालों ने मोदी जी का पाणिग्रहण संस्कार भी कराया किंतु उनके लिलार में परिवार बढ़ाना, चलाना विधि ने लिखा ही नहीं । मोदी जी भी अपना गम गलत करने संघ परिवार में शामिल हो गए।

कोई माने या न माने किंतु मैं मानता हूं कि भारत में नेहरू-गांधी परिवार से भी बड़ा संघ परिवार है। संघ परिवार में पाणिग्रहण का संस्कार नहीं होता लेकिन परिवार बढता रहता है। संघ परिवार के सदस्य भले ही रक्त संबंधी न हों लेकिन एक - दूसरे पर जान छिड़कते हैं। यानि एक - दूसरे के लिए मर भी सकते हैं और मार भी सकते हैं। ऐसा हमेशा से होता आ रहा है,। लेकिन अब शायद नहीं हो पाएगा।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी नेहरू - गांधी परिवार का खात्मा करने की अविराम कोशिश करते - करते संघ परिवार का ही खात्मा कर बैठे। उन्होंने संघ परिवार के स्थान पर मोदी परिवार का नारा दिया है। स्वर्ग में बैठे संघ के संस्थापक मान्यवर डॉ केशव बलिराम हेडगेवार आंसू बहा रहे हैं।वे अपनी आंखों के सामने संघ परिवार की साख पर मोदी परिवार की कोंपलें फूटते देख रहे हैं।

मै हर तरह के। परिवारवाद के खिलाफ रहा हूं किन्तु परिवार के खिलाफ कभी नहीं रहा। परिवार का सुख गृहत्यागी क्या जाने? बाझ के जानि प्रसव की पीड़ा? बहरहाल हम मोदी जी के नये परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।हम किसी के परिवार को कोसते नहीं हैं । परिवारवाद हर वाद से ज्यादा लोकप्रिय है। दुनिया भर में समाजवाद, पूंजीवाद, अधिनायकवाद अस्तित्व में हैं किन्तु परिवार सबमें हैं। अंबानी अपने बेटे को अपना उत्तराधिकारी बनाते हैं। तो बाकी भी ऐसा ही चाहते हैं। इसमें कोई ग़लत बात भी नहीं है।

मोदी जी के भी जब शितकेश हो गये तो उन्हें भी स्वाभाविक है कि परिवार की चिंता सताने लगी होगी। बिना परिवार के उनका नाम,वंश आखिर कैसे आगे बढ़ेगा ? मोदी जी अब तक देश पर जादू की लकड़ी घुमा रहे थे।अब उन्होंने संघ परिवार पर ही जादू की लकड़ी घुमा दी है। मोदी परिवार का नारा देकर उन्होंने संघ परिवार की इतिश्री कर दी है। मोदी जी को इस साहसिक कदम के लिए हार्दिक बधाई बनती है।

राजनीति में अजर - अमर होने के लिए परिवार एक जरूरी इकाई है। मोदी जी को भी आखिर परिवार चाहिए।वे अच्छी तरह जान गये हैं कि संघ परिवार उनका अपना परिवार नहीं है।संघ परिवार में तो शाखामृग होते हैं। मोदी जी तो शेर भी है और सवा सेर भी। उनके नाम का अलग परिवार होना ही चाहिए। मोदी जी का परिवार सबसे बड़ा और बलशाली हो इसके लिए मोदी जी का तीसरी बार सत्ता में आना आवश्यक है। मोदी जी संघ परिवार पर यकीन नहीं कर सकते। उनके लिए नीतीश कुमार भी काबिले यकीन नहीं हैं। बाबा यानि योगी आदित्यनाथ पर भी उन्हें शायद भरोसा नहीं है।

अब शेष भारत को तो छोड़ दीजिए, देखना ये है कि संघ परिवार के कितने लोग अपनी सोशल मीडिया बल्दियत में मोदी जी का नाम लिखते हैं? देखना ये भी है कि संघी भाई अब अपने आपको मोदी भाई कहलाना पसंद करेंगे या नहीं ? अब भविष्य की कल्पना कीजिए।जब संघ परिवार की जगह मोदी परिवार चलेगा तो संघ की शाखाओं का नाम भी स्वत- मोदी शाखा हो जाएगा। संघ की वर्दी भी मोदी जी की वर्दी बन जाएगी। इसके लिए किसी अध्यादेश की जरूरत थोड़े ही है।याद रहे कि संघ परिवार अगले साल 2025 में शतायु होने को था किन्तु मोदी जी ने उसे सचिन तेंदुलकर की तरह 99 साल में ही निबटा दिया।

भारतीय राजनीति में परिवारवाद के नफा-नुकसान से पूरी दुनिया वाकिफ हैं, सिवाय भारतीयों को छोड़कर। भारत में कोई भी क्षेत्र हो परिवारवाद का शिकार है। राष्ट्रीय ही नहीं क्षेत्रीय राजनीतिक दल भी परिवारवाद के गुलाम हैं। कोई दूध का धुला नहीं है। 2024 का आम चुनाव ही आम आदमी को ये मौका दे रहा है कि वो देश की राजनीति को हर हाल में,हर तरह के परिवारवाद से मुक्त कराए। भले ही वो कैसा भी परिवारवाद हो। वैसे हम पूरी वसुधा को अपना कुटुम्ब मानते हैं। इसलिए परिवारवाद हमारे डीएनए में हजारों साल से मौजूद हैं ।

राजस्थान भाजपा में उठने लगे बगावत के स्वर

राजस्थान में भाजपा ने आगामी लोकसभा चुनावों के लिये 15 सीटो पर प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी है। उसके बाद चूरू, बांसवाड़ा-डूंगरपुर जैसी कई सीटों पर विरोध के स्वर भी उठने लगे हैं। आदिवासी बहुल वागड़ क्षेत्र की बांसवाड़ा-डूंगरपुर लोकसभा सीट से भाजपा ने कांग्रेस से दलबदल कर भाजपा में आए विधायक महेंद्रजीत सिंह मालवीय को चुनावी मैदान में उतारा है। इसके बाद उनके खिलाफ खुलकर विरोध होने लगा हैं। बांसवाड़ा से कांग्रेस विधायक व पूर्व मंत्री अर्जुन सिंह बामनिया ने कहा है कि मालवीय ने 40 साल कांग्रेस का खाया, गरीबों का गला दबा के खाया। अब चाहे विधानसभा चुनाव लड़े या लोकसभा का जनता बख्शेगी नहीं। उन्होंने मालवीय पर 15 हजार करोड़ रूपयों के भ्रष्टाचार करने के आरोप भी लगाए हैं।

बांसवाड़ा में रविवार को विट्ठलदेव मंदिर परिसर में एक मीटिंग के दौरान मंत्री रहे अर्जुन सिंह बामनिया ने पूर्व मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालवीय का नाम लेकर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए। उन्होने कहा मालवीय 5 बार जिला प्रमुख, 4 बार विधायक, 2 बार मंत्री रहे। कुछ लोग कह रहे हैं कि 15 हजार करोड़ का घपला किया है इसलिए भाजपा में जाना ही पड़ा। कोई चिंता करने की बात नहीं 15 हजार करोड़ खाने के बाद खुद को बचाने के लिए भाजपा में गए तो भी ठीक या फिर लालच से गए तो भी ठीक। लेकिन बांसवाड़ा और बागीदौरा की जनता महेंद्रजीत मालवीय को बख्शेगी नहीं। आज हम सब विट्ठलदेव से कसम खाकर जाएं कि महेंद्र जीत सिंह मालवीय को घर से निकालना है।

इसके साथ ही बांसवाड़ा-डूंगरपुर से भाजपा टिकट की दावेदारी कर रहे भाजपा नेता हकरू मईडा ने भी महेंद्रजीत मालवीय पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होने कहा हम 40 साल मालवीय के खिलाफ लड़ाई लड़ते रहे। उनके भ्रष्टाचार के मामले उठाए। जिसके खिलाफ ईडी की जांच होनी चाहिए थी उसे पार्टी ने टिकट दे दिया। पार्टी ने टिकट दिया है तो पार्टी जाने। जिसको जेल जाना था उसे पार्टी ने सम्मान दिया। अब हम कुछ नहीं बोलना चाहते।

महेंद्रजीत सिंह मालवीय ने कहा मैंने ऐसा कुछ नहीं किया कि ईडी मेरे घर आए। फिर भी आती है तो मैं जांच के लिए तैयार हूं। आरोप चलते रहते हैं। जहां तक अर्जुन बामनिया के आरोप हैं तो मैं पूछना चाहता हूं कि पंचायती राज के बारे में बामनिया क्या जानते हैं। उनको यह नहीं पता कि भारत सरकार से राज्य सरकार से पैसा निकलकर सीधा पंचायत के खाते में जाता है। वहां कलेक्टर कुछ नहीं कर सकता न ही मंत्री या मुख्यमंत्री। 15 हजार करोड़ तो कभी बांसवाड़ा नहीं आया। अगर 40 साल से भ्रष्टाचार हो रहा है तो वे भी 4 बार विधायक रहे हैं। उनको भी तो कुछ न कुछ मिला होगा। वे भी तो शरीक होंगे।

उन्होंने कहा मैं शीर्ष नेतृत्व को आभार व्यक्त करता हूं। मुझ पर विश्वास कर प्रत्याशी बनाया। निश्चित ही हम जीत चुके हैं। 400 प्लस सीट लाकर प्रधानमंत्री मोदी बनेंगे। बांसवाड़ा में रेल लाएंगे। मानगढ को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कराएंगे, निम्बाहेड़ा से दाहोद नेशनल हाईवे बनाएंगे। साथ ही टीएसपी के लिए एक मास्टर प्लान बनाएंगे। उन्होंने भारतीय ट्राइबल पार्टी के लिए कहा कि यह पार्टी अपने आप खत्म हो जाएगी।

चूरू सीट पर भाजपा ने लगातार दो बार के सांसद राहुल कस्वां का टिकट काटकर पैरा आलम्पिक खिलाड़ी देवेन्द्र झाझड़िया को प्रत्याशी बनाया हैं। टिकट कटने पर कस्वां ने नाराजगी जाहिर करते हुये अपने समर्थकों की मिटिंग बुलाने की बात कही हैं। राहुल कस्वां भाजपा से बगावत कर चुनाव लड़ेगें। उनके पिता रामसिंह कस्वां भी चूरू से चार बार सांसद रह चुके हैं। राहुल कस्वां का टिकट राजेन्द्र राठौड़ के विरोध के चलते काटा गया हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में सात बार के विधायक राठौड़ तारानगर सीट पर हार गये थे तब उन्होने कस्वां को अपनी हार का जिम्मेदार बताया था। तभी से कस्वां की टिकट कटने की बात कही जा रही थी।

चर्चा है कि कस्वां कांग्रेस नेताओं के सम्पर्क में हैं तथा शिघ्र ही कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं। कस्वां परिवार का चूरू जिले की राजनीति में खासा असर है। उनके दादा, पिता, माता विधायक रह चुके हैं। उनके पिता ने 2004 में कांग्रेस के दिग्गज नेता बलराम जाखड़ को लोकसभा चुनाव में हरा दिया था। राहुल कस्वां उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के छोटे भाई कुलदीप धनखड़ के दामाद हैं। यदि राहुल कस्वां बगावत करता है तो भाजपा का राजस्थान में लगातार तीसरी बार 25 सीट जीतने का सपना शायद ही पूरा हो सकेगा।

नरेंद्र मोदी के सामने विपक्ष का चेहरा कौन?

आशीष वशिष्ठ

अगले कुछ दिनों में चुनाव आयोग लोकसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा करेगा। राजनीतिक दल चुनाव मैदान में कूद चुके हैं। देश का राजनीतिक तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। भाजपानीत एनडीए का चेहरा नरेंद्र मोदी हैं। ऐसे में अहम प्रश्न है कि मोदी के सामने विपक्ष का चेहरा कौन होगा? क्या विपक्ष चुनाव मैदान में उतरने से पहले किसी एक चेहरे पर सहमति बना पाएगा? या फिर विपक्ष बिना चेहरे के ही मोदी को चुनौती देगा? विपक्ष अभी तक यह तय नहीं कर पाया है कि मोदी के सामने कौन विपक्ष को चेहरा कौन होगा।

भाजपा ने पिछले चुनाव में भी इस बात को खूब प्रचारित किया था कि विपक्ष के पास मोदी का कोई विकल्प नहीं है। सोशल मीडिया पर आज भी इस बात की चर्चा होती है कि आम चुनाव में विपक्ष के पास प्रधानमंत्री के लिए कौन ऐसा उम्मीदवार है, जो मोदी की बराबरी करता दिखे? इसका कोई जवाब विपक्ष के पास नहीं है। विपक्ष में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार अनेक हैं। दलों में क्षेत्रीय स्तर पर टकराव बहुत हैं। इनके चलते विपक्ष चुनाव, संसद के भीतर या सड़क पर सरकार के खिलाफ एकजुट नहीं दिखाई देता है। नीतीश कुमार ने विपक्षी एकता का प्रयास किया था, लेकिन कांग्रेस के रवैये से रुष्ट होकर वो दोबारा एनडीए में शामिल हो चुके हैं।

इंडी अलायंस पिछले दस महीने में आधा दर्जन बैठकों के बाद भी किसी एक चेहरे के नाम पर सहमति नहीं बना पाया। विपक्ष का हर नेता स्वयं को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार समझता है। 2014 के बाद जब से नरेंद्र मोदी की अगुवाई में नई बीजेपी सामने आई तब से देश में चेहरा आधारित चुनाव का नया दौर शुरू हुआ। नरेंद्र मोदी के सामने विकल्प कौन? यह विपक्ष का सबसे अनसुलझा सवाल रहा। बीता साल भी विपक्ष ने इसी के जवाब में निकाल दिया। विपक्ष ने 27 दलों का इंडी अलांयस भी बनाया तब भी उसमें एक आम चेहरा सामने नहीं ला पाया।

वहीं अगर पिछले कुछ सालों का रिकार्ड देखें तो जिस राज्य में विपक्ष ने विधानसभा चुनाव में मजबूत चेहरा रखा वहां उसे विजय हासिल हुई। लेकिन केंद्र में आकर वह ऐसा करने में विफल रहा। बीती 19 दिसंबर को इंडी अलांयस की मीटिंग में यह मसला उठा और कुछ नेताओं ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का नाम आगे किया लेकिन इसमें सफलता नहीं मिली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने जोर देकर कहा कि विपक्षी दलों के लिए पहली प्राथमिकता आम चुनाव जीतना और फिर प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार का नाम तय करना होगा। उन्होंने कहा, ''आवश्यक सदस्यों के बिना पीएम उम्मीदवार के बारे में चर्चा निरर्थक है।'' खड़गे के गैर-प्रतिबद्ध रुख ने संकेत दिया कि गठबंधन का चेहरा नामित करने का मुद्दा विवादास्पद बना हुआ है। जबकि तमाम आंकड़े और सर्वेक्षण बताते हैं कि आजकल मतदाता चुनाव में नेतृत्व की स्पष्टता वाले दल की ओर अधिक जाना पसंद करते हैं।

ऐसे में विपक्ष के लिए इस अनसुलझे प्रश्न की तलाश सबसे अधिक है। मुकाबला तो साफ तौर पर घोषित उम्मीदवारों के बीच होता है। जब विपक्ष ने किसी को अपना चेहरा घोषित ही नहीं कर पाया, ऐसे में आमजन में यह संदेश गया कि विपक्ष के पास मोदी का मुकाबला करने वाला कोई नाम और चेहरा नहीं है। बिना किसी चेहरे के विपक्ष अपनी आधी लड़ाई शुरू होने से पहले ही हार चुका है। इंडी अलांयस के गठन के पहले ही दिन से कांग्रेस बड़ी चालाकी से गठबंधन के संयोजक के मुद्दे पर हीलाहवाली करती रही। सीट बंटवारे को लेकर भी उसका रूख कभी साफ नहीं रहा। वास्तव में कांग्रेस ने बड़ी चालाकी से नीतीष कुमार के बनाए मंच पर अपना वर्चस्व और प्रभुत्व स्थापित कर लिया। और रणनीति के तहत वो संयोजक के नाम की घोषणा जैसे अहम मुद्दे को बैठक दर बैठक टालती रही। गठबंधन में संयोजक ही प्रधानमंत्री पद का चेहरा होता। कांग्रेस यह नहीं चाहती थी कि राहुल गांधी के अलावा कोई दूसरा चेहरा गठबंधन की ओर से घोषित किया जाए। हालांकि कांग्रेस की चालाकी को नीतीश, केजरीवाल और ममता भांप गए। इसलिए इन तीन नेताओं ने कांग्रेस के रवैये की आलोचना करने से परहेज नहीं किया।

नीतीश तो गठबंधन से अलग हो गए। ममता ने मल्लिकार्जुन का नाम प्रधानमंत्री पद के लिए आगे बढ़ाकर राहुल और अन्य संभावित प्रत्याषियों का रास्ता रोकने का काम किया। केजरीवाल कांग्रेस के साथ आए भी तो अपनी षर्तों पर। कांग्रेस ने झुककर आप से सीटों का बंटवारा किया। ममता अकेले चुनाव लड़ने का संदेष दे ही चुकी है। मतलब साफ है कि गठबंधन में कोई किसी को आगे बढ़ता देखना नहीं चाहता। विपक्ष का हर नेता स्वयं को प्रधानमंत्री पद का दावेदार मानता है। और वो प्रधानमंत्री पद के लिए अपना रास्ता साफ रखना चाहता है।

देष की जनता विपक्षी नेताओं के चाल चरित्र और सत्ता की लोलुपता को बड़े ढ़ंग से देख रही है। जनता को पता है कि एक ओर प्रधानमंत्री मोदी जैसे ऊर्जावान और निस्वार्थ व्यक्ति है, जो अहर्निशं देष और देषवासियों के कल्याण और विकास के बारे में सोचता है। और दूसरी ओर एक ऐसा गठबंधन है, जिसके अधिकांष नेता अपना वर्तमान और अपने परिवार का भविष्य सुरक्षित करने के लिए जोड़ तोड़ कर रहे हैं। उन्हें मोदी को अपने सत्ता सुख के लिए हराना है।

विपक्ष देश की जनता को कभी यह नहीं बताता कि वो मोदी को हटाकर उनके लिए क्या करेंगे? देश के विकास का उनका मॉडल क्या है? उन्होंने देश के प्रगति का कौन सा रोडमैप तैयार किया है? विपक्ष मुफ्त की सौगातों और न पूरे होने वाले वायदे देकर सत्ता हासिल करने की कोशिशों में जुटा है। मोदी सरकार के हर काम की आलोचना और अड़चन को ही विपक्ष अपना धर्म और कर्तव्य मानता है। उसके पास कोई देष को आगे बढ़ाने का कोई माडल, रोडमैप और ब्लूप्रिंट नहीं है। देशवासी सब कुछ देख रहे हैं। पिछले दस वर्षों में देश में जो परिवर्तन और विकास हुआ है, उसे विपक्ष के नेता अपने बयानों की चादर से ढक नहीं सकते। सरकारी योजनाओं से करोड़ो देशवासी लाभन्वित हुए हैं। सरकारी कार्यप्रणाली में निष्पक्षता और पारदर्शिता का प्रतिशत बढ़ा है।

प्रधानमंत्री मोदी पिछले दो महीने में कई अवसरों पर अपने तीसरे कार्यकाल का जिक्र कर चुके हैं। बीती 3 मार्च को पीएम मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट की बैठक हुई। मौजूदा सरकार की यह आखिरी कैबिनेट बैठक थी। करीब 11 घंटे चली मीटिंग में विजन डॉक्यूमेंट विकसित भारत 2047, अगले 5 साल की योजनाओं और सरकार के तीसरे कार्यकाल के दौरान पहले 100 दिन की रणनीति पर चर्चा हुई। जहां एक ओर विपक्ष के कई बड़े नेता अपने लिए सुरक्षित सीटें और गठबंधन में सीटों के बंटवारे को लेकर उलझे हुए हैं। वहीं पीएम मोदी तीसरे कार्यकाल की रणनीति तय कर रहे हैं।

विदेशी सैलानियों की सुरक्षा का सवाल ?

प्रभुनाथ शुक्ल

भारत घूमने आए विदेशी सैलानियों की सुरक्षा का सवाल हमारे सामने यक्ष प्रश्न बनकर खड़ा है। विदेशी सैलानियों के साथ दुष्कर्म की घटनाएं जहाँ हमें कटघरे में खड़ा करती हैं वहीं दूसरी उनसे मारपीट, लूट और अधिक पैसे वसूलने की घटनाएं भी आम हैं।हमारे देश की संस्कृति अतिथि देव भव- की है। झारखंड के दुमका में एक स्पैनिश महिला के साथ कथित तौर पर गैंगरेप की घटना हमारे लिए चिंता का विषय है। भारत हमेशा से विदेशी सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। यहां की प्राकृतिक बनावट और धार्मिक विविधता लोगों को यहां खींच लाती है। प्राकृतिक वातावरण विदेशी सैलानियों की पहली पसंद हैं। विदेशी पर्यटकों को भौगोलिक एवं प्राकृतिक बनावट के साथ विविधता में एकता की संस्कृति अपनी तरफ आकर्षित करती है।

दुमका में हुई सामूहिक दुष्कर्म की घटना कोई पहली वारदात नहीं है। भारत में अक्सर विदेशी पर्यटक इस तरह की घटना का शिकार होते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण से भारत का पर्यटन देश की संवृद्धि में अच्छी खासी भूमिका निभाता है। लेकिन इस तरह की घटनाएं जहां हमारे देश की छवि को नुकसान पहुंचती है वहीं विदेशी पर्यटक यहां आने से डरते और घबराते हैं। हजारों की तादाद में विदेशी सैलानी एक बार भारत आए तो भारत के ही होकर रह गए। लेकिन विदेशी सैलानियों के साथ इस तरह की घटनाएं मारपीट, ठगबाजी हमारी छवि को प्रभावित करती हैं। इसके अलावा हमारे पर्यटन व्यवस्था पर भी सवाल उठाती है। दुमका में हुई सामूहिक दुष्कर्म की घटना हमारी संस्कृति और संस्कार के खिलाफ है। इस घटना में शामिल दोषियों को सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए। केंद्र सरकार को राज्य सरकार से मिलकर आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

पर्यटन मंत्रालय को इस संबंध में विशेष कदम उठाने चाहिए जिससे ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। ऐसी घटनाओं की फेहरिस्त बहुत लंबी है। बार-बार ऐसी घटनाएं होने के बाद भी हम आवश्यक कदम नहीं उठा पाते हैं। विदेशी पर्यटकों के लिए खास सुरक्षा के इंतजाम होने चाहिए। भारत आने वाले पर्यटकों के लिए जो सरकारी स्तर पर विशेष गाइड की व्यवस्था होनी चाहिए। यह सरकारी एजेंसी के माध्यम से होनी चाहिए। भारत आने वाले ऐसे पर्यटक कहाँ ठहर रहे हैं। कहां जा रहे हैं। उनके लिए कहां रुकना अच्छा रहेगा। सरकार की तरफ से उन्हें सारी सुविधा और सूचना उपलब्ध होनी चाहिए। सिविल पुलिस के बजाय इसके लिए अलग से विशेष पर्यटन पुलिस होनी चाहिए। पर्यटन पुलिस की विशेष जिम्मेदारी विदेशी सैलानियों की सुरक्षा के संदर्भ में होनी चाहिए। विदेशी पर्यटकों की सुरक्षा के लिहाज से सरकार को इस तरह की व्यवस्था के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। विदेशी पर्यटकों के साथ आमतौर पर भाषा की भी समस्या होती है ऐसे में उसके समाधान के लिए भी आवश्यक कदम उठाने चाहिए। दुमका में हुई घटना में भी पुलिस और पीड़ितों के बीच भाषा की समस्या देखने को मिली है।

भारत आने वाली विदेशी पर्यटकों के लिए केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय की तरफ से स्पष्ट गाइडलाइन भी होनी चाहिए। पर्यटकों को यह निर्देश होना चाहिए की आप जहां जा रहे हैं वहां की भौगोलिक स्थिति क्या है। अगर आप पहाड़ी या आदिवासी इलाके में घूमने जा रहे हैं तो वहां क्या समस्या हो सकती है। पहाड़ और दूसरी जगह पर जा रहे हैं तो क्या -क्या सावधानी बरतनी चाहिए। स्थानीय लोगों के बारे में भी जानकारी देना आवश्यक है। उनकी सुरक्षा को लेकर जहाँ खतरा हो सकता है इस सम्बन्ध में उन्हें आगाह करने की भी आवश्यकता है।

विदेशी दूतावास को भी भारतीय दूतावास से संपर्क में रहना चाहिए। उनकी सुरक्षा और सुविधाओं का ख्याल रखना हमारा दायित्व है। इस तरह की घटनाएं विदेशी पर्यटकों में असुरक्षा का जहाँ माहौल पैदा करती हैं वहीं हमारी सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल उठाती हैं।

विदेशी पर्यटकों की सुरक्षा या अन्य मामलों में सीधे केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय का हस्तक्षेप होना चाहिए। पर्यटन अब ग्लोबल शौक बन चुका है।